भाासकीय दिग्विजय स्व"ाासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव (छत्तीसगढ़)

हिन्दी विभाग

1. बी.ए./बीकॉम./बीएससी भाग–1 (हिंदी भाशा)

Program outcomes

- पल्लवन (संदर्भ विस्तार) पत्रलेखन, अनुवाद, शब्द शुद्वियां, पर्यायवाची, देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता, कम्प्यूटर की भाषा और संक्षिप्तिकरण
- कार्यालयीन भाषा, मीडिया की भाषा, संज्ञा, सर्वनाम, वि"ोषण एवं क्रिया वि"ोषण, संधि एवं समास
- विकास"ाील दे"ाों की समस्याएं, प्रौद्योगिकी, नगरीकरण, पर्यावरण प्रदूषण, कार्यालयीन पत्र
- भारत में जनसंख्या, गरीबी तथा बेरोजगारी

PSO

- यह प"नपत्र वास्तविक रूप से व्यावहारिक है।
- इसी आधार पर प्रतियोगी परीक्षाओं में प्र"न पूछे जाते हैं।
- देवनागरी लिपि की वैाज्ञनिक जानकारी से कार्यालयीन कार्य में सुविधा होती है। इसी कारण कार्यालयीन हिंदी को पाठ्य विषय में शामिल किया जाता है।
- तीसरे सत्र में विकास"ाील दे"ाों की तुलना में भारत की स्थिति को द"ार्ाते हुए, भारत की आर्थिक स्थिति सहित यहां की नागरी जीवन और जनसंख्या से विद्यार्थियों को अवगत कराना अनिवार्य माना गया है।
- वर्तमान युग में कम्प्युटर की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए इसकी भाषा ओर कार्यालयीन उपयोग में इसके व्यवहार को शामिल किया गया है।

2. बी.ए./बीकॉम/बीएससी– भाग–2 (हिंदी भाशा)

Program outcomes

- हिंदी साहित्य के पांच महत्वपूर्ण लेखकों के बिबंध
- हिंदी भाषा के विविध रूपों की प्रकृति
- कार्यालयीन भाषा ओर मीडिया की भाषा
- म"ाीनी भाषा
- संज्ञा, सर्वनाम, वि"ोषण, क्रिया वि"ोषण संधि, समास एवं शब्द संक्षिप्तियां

PSO

- इस पाठ्यक्रम से विद्यार्थियों में भाषा कौ"ाल के साथ ही हिंदी की साहित्य चेतना को समझने में सुविधा होगी।
- संकलित निबंधों के अध्ययन से गांधीजी, विनोबा भावे, आचार्य नरेन्द्र दव, वासुदेव"ारण अग्रवाल, भगवत"ारण उपाध्याय और हरि ठाकुर जैसे साहित्यकारों के साहित्यिक विचारों से विद्यार्थियों को अवगत कराना आव"यक समझा गया है।
- हिंदी भाषा के विविध स्वरूप के अंतर्गत कार्यालयीन भाषा, मीडिया की भाषा, वित्त एवं वाणिज्य और म"ाीनी की भाषा की व्यावहारिक प्रकृति से अवगत कराना पाठ्यक्रम का प्रधान उद्दे"य रहा है।
- संज्ञा, सर्वनाम, वि"ोषण और क्रिया वि"ोषण, संधि, समास हिंदी भाषा के ऐसे आधार पाठ्य विषय हैं जिनका अध्ययन सर्वत्र अनिर्वार्य माना जाता है। इनके व्यावहारिक ज्ञान के बिना हिंदी की जानकारी अधूरी ही रहेगीं इसलिए पाठ्यक्रम में इन्हें शामिल किया गया है।

3. बी.ए./बीकॉम/बीएससी– भाग–3 (हिंदी भाशा)

Program outcomes

- कविता, एकांकी और संस्कृति के साथ राष्ट्रीय एकीकरण का अध्ययने
- भाषा संप्रेषण कला
- हिंदी भाषा और सामान्य ज्ञान

- विकास"ाील दे"ाों समस्याओं का अध्ययन
- प्रौद्योगिकी और नगरीकरण
- आधुनिक तकनीकी सभ्यता
- पर्यावरण प्रदूषण तथा कार्यालयीन पत्र लेखन
- अनुवाद एवं प्रतिवेदन

PSO :

- इस पाठ्यक्र के अध्ययन से विद्यार्थियों में भाषा के साथ ही साहित्यिक अभिरूचि विकसित होगी। इसके लिए दो कविताएं और एक एकांकी को पाठ्यक्र में शामिल किया गया है।
- इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों में हिंदी भाषा के साथ–साथ समसामयिकी का ज्ञान बढ़ेगा।
- भारतीय संस्कृति के साथ ही राष्ट्रीय एकता के संबंध में अध्ययन से विद्यार्थियों में योग्य नागरिकता का बीजवपन होना स्वभाविक है।
- विकास"ाील दे"ाों की प्रमुख समस्याओं के अध्ययन से भारत की वास्तविक स्थिति को समझने में सहायता मिलती है। आधुनिक प्रौद्योगिकी एवं नगरीकरण की प्रक्रिया को समझने से एक योग्य नागरिक के गुण विकसित करने में सुविधा होती है।
- आधुनिक तकनीकी सभ्यता और पर्यावरण प्रदूषण की समस्या का अध्ययन वर्तमान पीढ़ी के लिए अनिवार्य विषय हैं। इसलिए इन्हें पाठ्यक्रम में शामिल करना अनिवार्य माना गया है। इनके अध्ययन से विद्यार्थी न केवल युगानुकूल विषय से अवगत होंगे बल्कि जीवन के किसी भी क्षेत्र में कार्य करने में दक्षता प्राप्त कर सकते हैं।
- अनुवाद एक ऐसा विषय है जिसकी मदद से एकाधिक भाषाओं के साहित्य और संस्कृति को समझने में मदद मिलती है। इसी प्रकार किसी घटना एय समारोह का प्रतिवेदन तैयार करना व्यवहारिक जीवन का अनिवार्य कार्य है।

4. बी.ए. भाग–1 (हिंदी साहित्य : प्र"नपत्र–1, प्राचीन हिंदो काव्य)

Program outcomes

- प्राचीन हिंदी काव्य
- कबीर, जायसी, सूरदास, तुलसीदास, घनानन्द
- विद्यापति, रहीम, रसखान

PSO :

- यह प्र"नपत्र मध्यकालीन हिंदी साहित्य की पृष्ठभूमि को रेखांकित करता है। इसके अंतर्गत भक्तिकाल और रीति काल का संत काव्य, भक्ति–द"ान और सूफी साहित्य शामिल है।
- यह साहित्य का प्र"नपत्र है, जिसमें कबीर की भक्ति पद्धति, जायसी का सूफी द"ान, तुलसी का समन्य द"ान तथा घनाननद का प्रेम द"ान पाठ्य विषय के अंतर्गत शमिल है।
- इनके साहित्य द"ान के अध्ययन से विद्यार्थियों में साहित्यिक रूचि और द"ान का विकास होगा।
- विद्यापति, रहीम और रसखान की साहित्य प्रवृत्ति का अध्ययन संक्षिप्त रूप में शामिल किया गया है। विद्यापति की भक्ति, रहीम के नीतिपरक दोहे और रसखान की प्रेम भक्ति के अध्ययन से सहित्य के विविध पक्षों का ज्ञान होना स्वाभाविक है।

5. बी.ए. भाग–1 (हिंदी साहित्य : प्र"नपत्र–2, हिंदी कथा साहित्य)

Program outcomes

- कहानी और उपन्यास
- व्याख्या और वि"लेषण

PSO :

- गद्य की प्रमुख दो विद्याएं कथा और उपन्यास को अध्ययन का विषय बनाया गया है।

- इसमें आठ प्रमुख कहानियों के साथ ही मुं"ाी प्रेमचंद के एक उपन्यास 'गबन' को पाठ्य विषय में शामिल किया गया है।
- इनके अध्ययन से दो विद्याओं की प्रकृति और दोनो की रचनागत वि"ोषताओं का ज्ञान होता है।
- इस प्र"नपत्र के अंतर्गत व्याख्या और आलोचनात्मक प्र"न पूछकर विद्यार्थियों के भाषा और रचनात्मक बोध का परिचय लिया जाता हैं

6. बी.ए. भाग–2 (हिंदी साहित्य : प्र"नपत्र–1, अर्वाचीन हिंदी काव्य)

Program outcomes

- पांच कवियों की चयनित कविताएं
- मैथिली"ारण गुप्त, निराला, सुमित्रानन्दन पंत, माखनलाल चतुर्वेदी, और अज्ञेय की प्रतिनिधि कविताएं
- अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', सुभद्रा कुमारी चौहान और श्रीकांत वर्मा का साहित्यिक परिचय

PSO :

- पाठ्यक्रम के अंतर्गत शामिल सभी कवि आधुनिक काल के प्रतिनिधि काव्यकार हैं। इनकी प्रतिनिधि कविताओं के अध्ययन से काव्य के आधुनिक स्वरूप का ज्ञान प्राप्त हाता है।
- मैथिली"ारण गुप्त और माखन लाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय काव्यधारा के कवि माने जाते हैं।
- सुमित्रानन्दन पंत प्रकृतिपरक कवि और अज्ञेय नई कविता के प्रणेता हैं। इन सबकी रचनाओं का एक साथ अध्ययन करने से काव्यजगत की विविधता का बोध होता है।
- हरिऔध, सुभद्र कुमारी चौहान और श्रीकांत वर्मा की साहित्यिक प्रकृति का अध्ययन कराना भी इस प्र"नपत्र का उद्दे"य है।

7. बी.ए. भाग–2 (हिंदी साहित्य : प्र"नपत्र–2, हिंदी निबंध तथा अन्य गद्य विधाएं)

Program outcomes

- एक नाटक सहित पांच प्रतिनिधि एकांकी
- पाच निबंध
- द्रुतपाठ के तीन रचनाकार

PSO :

- एक नाटक सहित पांच एकांकी के अध्ययन से विद्यार्थियों में नाटक एकांकी का भेद स्पष्ट होता है
- विविध विषयों पर महत्वपूर्ण पांच साहित्यिक निबंधों के अध्ययन से विषयगत जानकारी और लेखन कला–कौ"ाल में विकास संभव है।

8. बी.ए. भाग–3 (हिंदी साहित्य : प्र"नपत्र–1, जनपदीय भाशा साहित्य छत्तीसगढ़ी)

Program outcomes

- छत्तीसगढ़ी भाषा का इतिहास
- छत्तीसगढ़ी साहित्य का इतिहास
- छत्तीसगढ़ी रचनाकारों का परिचय

PSO :

- प्रदे"ा की राजभाषा छत्तीसगढ़ी के अध्ययन को ध्यान में रख गया पाठ्यक्रम है।
- इसके अध्ययन–अध्यापन से छत्तीसगढो भाषा और साहित्य का बोध होता है।
- प्रदे"ा की प्रतियोगी परीक्षाओं में इससे संबंधित प्र"नों के उत्तर लेखन में सहायता मिलती है।

9. बी.ए. भाग–3 (हिंदी साहित्य : प्र"नपत्र–2, हिंदी भाशा–साहित्य का इतिहास तथा काव्यांग विवेचन)

Program outcomes

- हिंदी भाषा की उत्पत्ति एवं विकास
- हिंदी साहित्य का विकास एवं इतिहास
- हिंदी की शब्द संपदा
- काव्यांग

PSO :

- स्नातक स्तर के इस पाठ्यक्रम में हिंदी भाषा और साहित्य को आधार बनाया गया है। इसके अध्ययन से आगे स्नातकोत्तर की पढ़ाई करने के इच्छुक विद्यार्थियों की दृष्टि स्पष्ट हो जाती है।
- काव्यांग के अंतर्गत काव्य के प्रमुख तत्व तथा उनके अंगों का विवेचनात्मक अध्ययन करने से काव्य"ाास्त्र की जानकारी होती है और साहित्य को समझने में सुविधा भी होती है।

स्नातकोत्तर हिंदी

1. स्नातकोत्तर हिंदी : प्रथम सेमेस्टर
(प्रथम प्र"नपत्र : आदिकाल एवं पूर्व मध्यकाल–इतिहास)

Program outcomes

- **इतिहास, द"र्न और साहित्येतिहास**
- **सूफी प्रेमाख्यानक काव्य**
- **रासो काव्य परंपरा**
- **पृथ्वीराजरासो**
- **आधुनिक काव्य (छायावाद एवं पूर्ववर्ती काव्य)**
- **आधुनिक गद्य साहित्य : नाटक, एकांकी एवं चरितात्मक कृति)**

- हिंदी वर्णमाला एवं वर्तनी

PSO :

- हिंदी इतिहास लेखन की परंपरा, काल विभाजन, एवं नामकरण की समस्याओं का अध्ययन होने से हिदी की पृश्ठभूमि का ज्ञान होता है

- हिंदी के पहले महाकाव्य पृथ्वीराजरासो सहित रासो काव्य परंपरा और उनका परिचय–अध्ययन से साहित्यिक परंपरा का ज्ञान होता हैं
- भक्तिकालीन काव्य परंपरा के प्रमुख कवि कबीर की साखियों और पदों के माध्यम से कबीर की रचनाधर्मिता से परिचय कराना इस पाठ्कम का उद्दे”य रहा है।
    - इस प्र”नपत्र में दो महाकाव्य सहित निराला और महादेवी वर्मा की एक–एक प्रमुख कविताएं भाामिल हैं।
    - इनके अध्ययन से विद्यार्थियों में महाकाव्यात्मक प्रकृति का बोध होता है।
    - निराला और महादेवी की दो प्रमुख कविताएं भी हिंदी जगत की प्रमुख रचनाओं में भाामिल हैं।

    - दो नाटकों एवं एकांकियों के अध्ययन से नाटक–एकांकी की प्रकृत्ति का गहरा अध्ययन होना स्वाभाविक है।
    - चरितात्मक कृति के अंतर्गत महादेवी वर्मा लिखित निराला और सुभद्र कुमारी चौहान के चरित्र का उल्लेख मिलता है।
    - पांच एकांकीकारों का संक्षिप्त परिचय भी इस प्र”नपत्र में भाामिल है।

- **इस प्र"नपत्र के अध्ययन–अध्यापन का उद्दे"य हिंदी भाशा की मूल पहचान कराना है।**
- **इसके अध्ययन से हिंदी वर्णमाला के वैज्ञानिक लेखन और वि"लेशण का बोध होता है।**
- **हिंदी में वर्णों की संख्या अधिक होने के कारण उसकी वर्तनी का भेद और स्वरूप समझना अनिवार्य है।**
- **हिंदी में भाब्द निर्माण और उसके भाब्दार्थ का बोध होने से विद्यार्थियों का विशय का वि"ोश ज्ञान प्राप्त होता है।**

2. स्नातकोत्तर हिंदी : द्वितीय सेमेस्टर

Program outcomes

- उत्तर मध्यकालीन काव्य से आधुनिक काल–इतिहास
- मध्यकालीन काव्य
- प्रयोगवादी एवं प्रगतिवादी काव्य
- आधुनिक गद्य साहित्य–उपन्यास, निबंधएवं कहानी
- **व्यावहारिक हिंदी–"ाब्द और भाब्दार्थ**

PSO :

- **इस प्र"नपत्र का उद्दे"य विद्यार्थियों को हिंदी साहित्य के मध्यकालीन साहित्य का बोध कराना है।**
- **इसमें मध्यकालीन हिंदी साहित्य के इतिहास एवं गद्य–पद्य दोनों का अध्ययन भाामिल हैं, जिसमें कहानी, उपन्यास ओर निबंध भाामिल हैं।**
- **इसी प्रकार व्यावहारिक हिंदी के अंतर्गत हिंदी भाब्द और भाब्दार्थ की प्रकृति को समझने से विद्यार्थियों में भाशा के गूढ़ अर्थ को समझने की सहायता मिलती है।**

3. स्नातकोत्तर हिंदी : तृतीय सेमेस्टर

Program outcomes

- साहित्य के सिद्धांत तथा आलोचना भाास्त्र
- भाशा विज्ञान
- प्रयोजन मूलक हिंदी
- भारतीय साहित्य

PSO :

- इसके अंतर्गत साहित्य के सिद्धांत और आलोचना"ाास्त्र के अध्ययन से साहित्य की प्रकृति और उसकी वि"ोशताओं को समझने की दृश्टि विकसित होती है।
- भाशा विज्ञान का अध्ययन एक वैज्ञानिक पद्धति का कार्य है। इसके अध्ययन से भाशा की संरचना और उसके विकास की गति समझने की कला विकसित होती है।
- प्रयोजनमूलक के पाठ्य विशय पूर्णतः व्यावहारिक अध्ययन के विशय हैं। कार्यालयीन प्रयोग से लेकर पत्रकारिता के क्षेत्र में काम करने का व्यवाहारिक ज्ञान इसी से होता है।
- भारतीय साहित्य के अंतर्गत हिंदीत्तर भाशा और साहित्य का ज्ञान कराया जाता है।

4. स्नातकोत्तर हिंदी : चतुर्थ सेमेस्टर

Program outcomes

- हिंदी आलोचना तथा समीक्षा "ाास्त्र
- भाशा विज्ञान
- मीडिया लेखन एवं अनुवाद
- जनपदीय भाशा और साहित्य छत्तीसगढ़ी

PSO :

- हिंदी आलोचना की विकास यात्रा को समझते हुए उसकी खामियों एवं खूबियों को समझने के लिए इसका अध्ययन आव"यक समझा जाता है।

- मीडिया लेखन के अंतर्गत प्रींट एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया के प्राथमिक कार्यों का प्र्”ाक्षण मिलता है।
- जनपदी भाशा के अंतर्गत छत्तीसगढ़ की राजभाशा की भाशिक संरचना और इसके साहित्य का अध्ययन–अध्यापन किया जाता है। इससे प्रादे”ाक प्रतियोगिता परीक्षाओं में भाामिल होने वाले छात्र–छात्राओं को काफी लाभ मिलता है।

डॉ. शंकर मुनि राय

(विभागाध्यक्ष)

बीए/बीकॉम./बीएससी भाग–1

आधार पाठ्यकम : प्रथम प्र”नपत्र

(पेपर कोड–)

हिंदी भाषा पूर्णांक 75

नोट : 1. प्र”नपत्र 75 अंक का होगा।

2. प्र”नपत्र अनिवार्य होगा।

3. इसके अंक श्रेणी निर्धारण के लिए जोड़े जाएंगे।

4. प्रत्येक इकाई के अंक समान होंगे।

पाठ्यविशय :

इकाई–1 : पल्लवन, पत्राचार तथा अनुवाद एवं पारिभाषिक शब्दावली।

इकाई–2 : मुहावरे–लाकोक्तियां, शब्द"ाुद्धि, वाक्य"ाुद्धि, शब्दज्ञान–पर्यायवाची, विलोम,

अनेकार्थी, समश्रुत, अनेकशब्दों के लिए एक शब्द।

इकाई–3 : देवनागरी लिपि की वि"ोषता, देवनागरी लिपि एवं वर्तनी का मानक रूप।

इकाई–4 : कम्प्यूटर में हिंदी का अनुप्रयोग, हिंदी में पदनाम।

इकाई–5 : हिंदी अपठित, संक्षेपण, हिंदी में संक्षिप्तीकरण।

पाठ्यक्रम के लिए पुस्तकें–

1. भारतीयता के स्वरसाधन–धनंजय वर्मा, मप्र. ग्रंथ अकादमी।
2. नगरी लिपि और हिंदी–अननत चौधरी, ग्रंथ अकादमी पटना।
3. कम्प्यूटर और हिंदी–हरिमोहन, तक्षा"ाला प्रका"ान दिल्ली।

1..... 2.....

बीए/बीकॉम./बीएससी भाग–2

आधार पाठ्यक्रम : प्रथम प्र"नपत्र

(पेपर कोड 0171)

हिंदी भाषा पूर्णांक 75

खण्ड–क :निम्नलिखित पांच लेखकों के एक–एक निबंध पाठ्यक्रम में सम्मिलित होंगे–

1. महात्मा गांधी– सत्य और अहिंसा2. विनोबा भावे– ग्रामसेवा

3. आचार्य नरेन्द्र देव– युवकों का समाज में स्थान 4. वासुदेव"ारण अग्रवाल–मातृभमि

5. भागवत"ारण उपाध्याय–हिमालय की व्युत्पत्ति 6. हरि ठाकुर– डॉ. खूबचंद बघेल

खंड–ख :

1. हिंदी भाशा और उसके विविध रूप : कार्यालयीन भाशा, मीडिया की भशा, वित एवं वाणिज्य की भाशा, म"ाीनी भाशा।

खंड–ग :अनुवाद व्यवहार : अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद

हिंदी की व्यवहारिक कोटियां

रचनागत प्रयोग उदाहरण, संज्ञा, सर्वनाम, वि"ोषण, क्रिया वि"ोषण, समास, संधि एवं संक्षिप्तियां, रचना एवं प्रयोगगत विवेचन।

1..... 2.....

बीए / बीकॉम. / बीएससी भाग–3

आधार पाठ्यक्रम : प्रथम प्र"नपत्र

संप्रेशण कौ"ाल, हिंदी भाशा और सामान्य ज्ञान)

(पेपर कोड 0231)

हिंदी भाषा पूर्णांक 75

आधार पाठ्यक्रम की संरचना और अनिवार्य पाठ्य–पुस्तक 'हिंदी भाषा एवं समसामयिकी' का संयोजन किया है कि सामान्य ज्ञान की विषय–वस्तु विकास दे"ाों की समस्याओं के माध्यम , आधार और साथ–साथ हिंदी भाषा का ज्ञान और उसमें संप्रेषण कौ"ाल अर्जित किया जा सके। इसी प्रयोजन से व्याकरण की अंतर्वस्तु को विविध विधाओं की संकलित रचनाओं और सामान्य ज्ञान की पाठ्य सामग्री के साथ अंतर्गुंफित किया गया है। अध्ययन–अध्यापन के लिए पूरी पुस्तक की पाठ्य सामग्री है और अभ्यास के लिए विस्तृत प्र"नावली है। यह प्र"नपत्र भाषा का है, अतः पाठ्य समग्री का व्याख्यात्मक या आलोचनात्मक अध्ययन अपेक्षित नहीं है। पाठ्यक्रम और पाठ्य सामग्री का संयोजन निम्नलिखित पांच इकाइयों में किया जाता है। प्रत्येक इकाई दो भागो में विभक्त है।

इकाई–1(क) भारत माता –सुमित्रानन्द पंत

पर"ाुराम की प्रतीक्षा– रामधारी सिंह दिनकर

बहुत बड़ा सवाल–मोहन राके"ा

संस्कृति और राष्ट्रीय एकीकरण–योगे"ा अटल

(ख)कथन की शैलियां : रचनागत उदाहरण और प्रयोग

इकाई–2(क) विकास"ाील दे"ाों की समस्याएं, विकासात्मक पुनर्विचार, प्रौद्योगिकी और

नगरीकरण।

(ख)विभिन्न संरचनाएं।

इकाई–3(क) आधुनिक तकनीकी सभ्यता, पर्यावरण प्रदूषण तथा धारणीय विकास।(ख)

कार्यालयीन पत्र और आलेख।

इकाई–4

(क)जनसंख्या : भारत के संदर्भ में गरीबी तथा बेरोजगारी।

(ख) अनुवाद

इकाई–5

(क) उर्जा और शक्तिमानता का अर्थ"ाास्त्र।

(ख)घटनाओं, समारोहों आदि का प्रतिवेदन और विभिन्न प्रकार के निमंत्रण पत्र।

मूल्यांकन योजना –प्रत्येक इकाई से एएक–एक प्र"न पूछा जाएगा। प्रत्येक प्र"न में आंतरिक विकल्प होगा। प्रत्येक प्र"न के 15 अंक होंगे। प्रत्येक इकाई दो–दो खंड क्रम"ाः क और ख में विभक्त है, इसलिए प्रत्येक प्र"न के भी दो भाग क्रम"ाः क और ख होंगे। क अर्थात् पाठ एवं सामन्याान से संबद्ध के अंक आठ एवं ख अर्थात भाषा और संप्रेषण कौ"ाल से संबद्ध के अंक सात होंगे। इस प्रकार पूरे प्र"नपत्र के पूर्णांक 75 होंगे।

1..... 2.....

बी.ए. भाग–1
हिंदी साहित्य
प्रथम प्र"नपत्र
प्राचीन हिंदी काव्य (पेपर कोड–0103 पूर्णांक 75

उद्दे"य एवं प्रस्तावना : प्राचीन से तात्पर्य है–आधुनिक काल से पूर्व का काल। सही अर्थ में हिदी भाषा ओर साहित्य का विकास आदिकाल से शुरू होता है। इसमें धार्मिक तााि ऐतिहासिक दो प्रकार का साहित्य मिलता है, जो प्रबंध, मुक्तक, रासो, फागु, चरित, सुभाषित आदि विविध काव्यरूपों में अभिव्यंजित है। मध्यकालीन साहित्य की पृष्ठभूमि के रूप में इसे प्रतिष्ठापित किया जाता है।

मध्यकालीन काव्य में भक्तिकाव्य, जहां लोक जागरण को स्वर देनेवाला है वहीं रीति काल अपने लौकिक श्रृंगारिता, परिदृ"य में तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक स्थितियों को बेलौस अभिव्यंजित करता है। अतः भाषा, संस्कृति, विचार, मानवता, काव्यत्व, काव्यरूपता, लौकिकता–पारलौकिता आदि दृष्टियों से इसका अध्ययन अत्याव"यक है।

पाठ्य विशय :

1. कबीरदास : (कबीर–कांतिकुमार जैन–प्रारंभिक 50 साखियां।)
2. जायसी : संक्षिप्त पद्मावत–"यामसुंदर दास – नागमती वियोग वर्णन।
3. सूरदास : (भ्रमरगीत सार–संपादक आचार्य रामचंद्र शुक्ल– प्रारंभिक 25 पद)
4. तुलसीदास : ''श्रीरामचरितमानस'' के अध्योध्याकांड से 25 दोहे, चौपाई,

छंद सहित।

5. घनानन्द : घनानन्द– संपादक, वि"वनाथ प्रसाद मिश्र– प्रारंभिक 25 छंद।

द्रुतपाठ : इसकेअंतर्गत विद्यापति, रहीम और रसखान का अध्ययन किया जाएगा, जिनमें से किन्दी दो पर लघु उत्तरीय प्र"न पूछे जाएंगे।

अंक विभाजन

1. 3 व्याख्याएं 30 प्रति"ात
2. आलोचनात्मक प्र"न 30 प्रति"ात
3. लघु उत्तरीय प्र"न 20 प्रति"ात
4. वस्तुनिष्ठ प्र"न 20 प्रति"ात

बो.ए. भाग–1
हिंदी साहित्य
द्वितीय प्र"नपत्र
हिंदी कथा साहित्य (पेपर कोड–0104 पूर्णांक 75

उद्दे"य एवं प्रस्तावना : गद्य की प्रमुख विधाओं का इतना द्रुत विकास इनकी लोकप्रियता का प्रमाण प्रस्तुत करता है। इसमें आधुनिक जीवन, अपनी विविध कमियों के साथ यथार्थ रूप में अभिव्यंजित हुआ है। जीवन की अनुभूतियां, संवेदनाओं तथा विविध परिस्थितियों के साक्षात्कार के लिए इनका अध्ययन सर्वथा अपेक्षित है।

पाठ्य विशय : व्याख्या एवं आलोचनात्मक प्र"नों के लिए एक उपन्यास एवं आठ कहानीकारों की एक–एक प्रतिनिधि कहानी का अध्ययन आव"यक है।

उपन्यास : 1. गबन– मुं"ाी प्रेमचंद

कहानी :

1. कफन– प्रेमचंद
2. आका"ादीप– जय"ांकर प्रसाद
3. परदा– य"ापाल
4. ठेस–फणी"वरनाथ रेणु
5. मलबे का मालिक–मोहन राके"ा
6. चीफ की दावत–भीष्म साहनी
7. बिरादरी बाहर–राजेन्द्र यादव
8. गदल– रांगेय राघव

द्रुतपाठ के लिए निम्नांकित तीन कथाकारों का अध्ययन अपेक्षित है, जिनमें से किन्ही दो पर लघु उत्तरीय प्र"न पूछे जाएंगे।

1. उपेन्द्रनाथ अ"क 2 बाल"ौरि रेड्डी 3. ि"ावानी

अंक विभाजन

3 व्याख्याएं	30 प्रति"ात
2 आलोचनात्मक प्र"न	30 प्रति"ात
5 लघु उत्तरीय प्र"न	20 प्रति"ात
20वस्तुनिष्ठ प्र"न	20 प्रति"ात
कुल	75

बी.ए. भाग–2

हिंदी साहित्य

द्वितीय प्र"नपत्र

हिंदीनिबंध तथा अन्य गद्य विधाएं (पेपर कोड–0174) **पूर्णांक 75**

पाठ्य विषय :

व्याख्या एवं आलोचनात्मक प्र"नों के लिए एक नाटक, पांच प्रतिनिधि निबंध और पांच एकांकी का निर्धारण किया गया है।

नाटक: अंधेर नगरी– भारतेन्दु हरि"चंद्र

निबंध :

1. क्रोध– आचार्य रामचंद्र शुक्ल
2. बसंत– आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
3. उस अमराई ने राम–राम कह है–डॉ. विद्यानिवास मिश्र
4. काव्येषु नाट्यम् रम्यम्– बाबू गुलाब राय
5. बेईमानी की परत– हरि"ांकर परसाई

एकांकी:

1. औरंगजेब की आखिरी रात– रामकुमार वर्मा
2. स्ट्राइक– भुवने"वर
3. एक दिन– लक्ष्मीनारायण मिश्र
4. दस हजार– उदय"ांकर भट्ट
5. मम्मी ठकुराईन–डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल

द्रुतपाठ के लिए तीन गद्यकार राहुल सांकृत्ययान, महादेवी वर्मा एवं हबीव तनवीर का अध्ययन किया जाएगा, जिन पर लघु उत्तरीय प्र"न पूछे जाएंगे।

अंक विभाजनः

3 व्याख्याएं	21 अंक
2 आलोचनात्मक प्र"न	24 अंक
5 लघु उत्तरीय प्र"न	15 अंक
15 वस्तुनिष्ठ /अति लघूत्तरीय प्र"नप्र"न	15 अंक

कुल 75 अंक

इकाई विभाजनः

इकाई– 1 व्याख्या

इकाई–2 अंधेर नगरी एवं क्रोध, बसंत, उस अमराई ने राम–राम कही है।

इकाई–:3 औरंगजेब की आखिरी रात, स्ट्राइक, एक दिन, दस हजार, मम्मी ठकुराईन।

इकाई–4 द्रुतपाठ के गद्यकार–राहुल सांकृत्यायन, महादेवी वर्मा और हवीब तनवीर।

इकाई–5 वस्तुनिष्ठ/ अति लघूत्तरीय प्र"न (समग्र पाठ्क्रम से)

बो.ए. भाग–2
हिंदी साहित्य
प्रथम प्र"नपत्र

अर्वाचीन हिंदी काव्य (पेपर कोड 0173) **पूर्णांक 75**

प्रस्तावना : आधुनिक काव्य आधुनिकता की समस्त वि"ोषताओं को समेटे हुए है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व की भाव–भाषा, f"ाल्प, अंतर्वस्तु संबंधी समस्त विकास धारा यहां सजीव रू" में देखी जा सकती हैं। इसे अनदेखा करना मनुष्य की विकास यात्रा को नजर अंदाज करना है। इस यात्रा के साक्षात्कार के लिए आधुनिक काव्य का अध्ययन अपेक्षित ही नहीं अपितु अनिवार्य है।

पाठ्य विशय–

1. **मैथिली"ारण गुप्त** : भारत–भारती की कविताएं
2. **सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'** : सखि बसंत आया, वर दे, वीणा वादिनी वर दे! हिंदी के सुमनों के प्रति पत्र, तोड़ती पत्थर।
3. **सुमित्रानन्दन पंत** : बादल, परिवर्तन 2 पद– खोलता इधर जन्मलोचन, आज का दुख कल का आल्हाद, ताज, झंझा में नीम, भारत माता।
4. **माखन लाल चतुर्वेदी** : बलि पंथी से, सांझ और ढोलक की थापें, मैं बेच रही हूं दही, उलाहना, नि:"ास्त्र सेनानी।
5. **स.ही. वात्स्यायन अज्ञेय** : सबेरे उठा तो धूप खिली थी, साम्राज्ञी का नैवेद्य दान, घर, चांदनी जी लो, दुर्वाचल।

   द्रुतपाठ के रचनाकार : अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', सुभद्रा कुमारी चौहान, श्रीकांत वर्मा,

अंक विभाजन : 3 व्याख्या : 21 अंक
2 आलोचनात्मक प्र"न : 24 अंक
5 लघु उत्तरीय प्र"न : 15 अंक
15 वस्तुनिष्ठ/अति लघुउत्तरीय प्र"न : 15 अंक

इकाई विभाजन :
इकाई–1 : व्याख्या
इकाई–2 : गुप्त, निराला
इकाई–3 : पंत, चतुर्वेदी, अज्ञेय
इकाई–4 : द्रुतपाठ के कवि एवं आधुनिक काव्यधारा का इतिहास (राट्रीय काव्यधारा, छायावाद, प्रतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता)
इकाई– : वस्तुनिष्ठ/ लघु उत्तरीय प्र"न, सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से।

बो.ए. भाग–2
हिंदी साहित्य
द्वितीय प्र"नपत्र

हिंदी निबंध तथा अन्य गद्य विधाएं (पेपर कोड 0174) **पूर्णांक 75**

पाठ्य विशय– व्याख्या और आलोचनात्मक प्र"नों के लिए एक नाटक, पांच प्रतिनिधि निबंध ओर पांच एकांकी का निर्धारण किया गया है।

नाटक–अंधेर नगरी –भारतेन्दु हरि"चंद्र

निबंध–

1. क्रोध– आचार्य रामचंद्र शुक्ल
2. बसंत–डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी
3. उस अमराई ने राम–राम कही– डॉ. विद्यानिवास मिश्र
4. काव्येषु नाट्यम् रम्यम्– बाबू गुलाब राय
5. बेईमानी की परत–हरि"ांकर परसाई

एकांकी–

1. औरंगजेब की आखिरी रात–रामकुमार वर्मा
2. स्ट्राईक– भुवने"वर
3. एक दिन–लक्ष्मीनारायण मिश्र
4. दस हजार–उदय"ांकर भट्ट
5. मम्मी ठकुराईन–डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल

द्रुतपाठ के लिए तीन गद्यकारों का अध्ययन किया जाएगा, जिन पर लघु उत्तरीय प्र"न पूछे जाएंगे।

1. राहुल सांकृतयायन 2. महादेवी वर्मा 3. हबीब तनवीर

अंक विभाजन–

3 व्याख्याएं	21 अंक
2 आलोचनात्मक प्र"न	24 अंक
5 लघु एत्तरीय प्र"न	15 अंक
15 वस्तुनिष्ठ अति लघु उत्तरीय प्र"न	15 अंक

इकाई विभाजन–

इकाई–1 व्याख्या

इकाई–2 अंधेर नगरी एवं क्रोध, बसंत, उस अमारई ने राम–राम कही।

इकाई–3 औरंगजेब की आखिरी रात, स्ट्राईक, एक दिन, दस हजार, मम्मी ठकुराईन

इकाई–4 द्रुतपाठ के रचनाकार : राहुल सांकृत्यायन, हबीब तनवीर।

इकाई–5 वस्तुनिष्ठ/ लघु उत्तरीय प्र"न, (सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से।)

बो.ए. भाग–3
हिंदी साहित्य
प्र"नपत्र प्रथम

जनपदीय भाशा–साहित्य (छत्तीसगढ़ी)(पेपर कोड 0233) **पूर्णांक 75**

प्रस्तावना : हिंदी केवल खड़ी बोली नहीं है, बल्कि एक बहुत बड़ा भाषिक समूह है। हिंदी जगत में अनेक विभाषाएं, बोलियां और उपबोलियां विद्यमान हैं, जिनमें पुष्कल साहित्य संपदा है। इनके सम्यक् अध्ययन और अन्वेषण की आव"यकता है। जनपदीय भाषा छत्तीसगढ़ी निरंतर विकास की ओर अग्रसर हो रही है। अस्तृ, इस भाषा का और इसमे रचित साहित्य का इतिहास– विकास स्पष्ट करते हुए इनसे संबंधित प्रमुख रचनाकारों का आलोचनात्मक अनु"ाीलन करना हिंदी के वृहत्तर हित में होगा। छत्तीसगढ़ी भाषा का पाठ्यक्रम निम्नलिखित विन्दुओं पर आधारित है–

क–छत्तीसगढ़ी भाषा का इतिहास–विकास।

ख–छत्तीसगढ़ी भाषा में रचित साहित्य का इतिहास।

ग–छत्तीसगढ़ी भाषा के प्रमुख प्राचीन एवं अर्वाचीन रचनाकारों की कृतियों का अध्ययन

पाठ्य विशय–

रचनाएं– 1. प्राचीन कवि संत धरमदास के तीन पद 1. गुरू पंइया लागों नाम लखा दीजो हो 2. नैन आगे ख्याल घनेरा 3 भजन करौ भाई रे, अइसन तन पाय के। (धरमदास के शब्दावली से उधृत)

2. लखन लाल गुप्त का गद्य : सोनपान (गद्य–पुस्तक 'सोनपान' से उधृत)
3. अर्वाचीन रचनाकार : डॉ. सत्यभामा आड़िल रचित गद्य–सीख–सीख के गोठ
4. डॉ. विनय पाठक की कविताएं– तंय उठथस सुरूज उथे, एक किसिम के नियाव, (अकादसी और अनचिन्हार पुस्तक से उधृत)
5. मुकुंद कौ"ल : (छत्तीसगढ़ गजल) ''छै बित्ता के मनखे देखों.....से– मछरी मन लाख लेथे'' तक (पुस्तक 'छत्तीसगढ़ गजल' के पृष्ठ 17 से उधृत)

दृतपाठ के रचनाकर– (व्यक्तित्व एवं कृतित्व) 1 सुदर लाल शर्मा, कपिलनाथ क"यप, रामचंद्र दे"मुख (रंगकर्मी)

अंक विभाजन –

3 व्याख्याएं	21 अंक
2 आलोचनात्मक प्र"न	24 अंक
5 लघु उत्तरीय प्र"न	15 अंक
15 वस्तुनिष्ठ/ अति लघु उत्तरीय प्र"न	15 अंक

इकाई विभाजन–

इकाई–1 व्याख्या

इकाई–2 प्राचीन एवं अर्वाचीन रचनाकार।

इकाई–3 (अ) छत्तीसगढ़ भाषा का इतिहास (ब) छत्तीसगढ़ साहित्य का इतिहास

इकाई–4 द्रुतपाठ के तीन रचनाकार ।

इकाई–5 वस्तुनिष्ठ/ लघु उत्तरीय प्र"न, सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से।

बी.ए. भाग–3
हिंदी साहित्य
प्र"नपत्र द्वितीय

हिंदी भाशा–साहित्य का इतिहास तथा काव्यांग विवेचन (पेपर कोड 0234) पूर्णांक 75

प्रस्तावना : हिंदी भाषा का इतिहास जितना प्राचीन है उतना ही गूढ़गहन भी। इसमे रचित साहित्य ने लगभग डेढ़ हजार वर्षो का इतिहास पूरा कर लिया है। इसलिए हिंदी भाष और साहित्य के ऐतिहासिक विवेचन की बड़ी आव"यकता है। साथ–साथ हिंदी ने अपना जो स्वतंत्र साहित्य शास्त्र निर्मित किया है उसे भी रूपायित करने की आव"यकता है। संज्ञान द्वारा विद्यार्थी की मर्मग्राहिणी प्रतिभा का विकास होगा और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में शुद्ध साहित्यिक विवेक का समावे"ा हागा।

पाठ्य विशय :

(क) हिंदी भाषा का स्वरूप–विकास : हिंदी की उत्पत्ति, हिंदी की मूल आकर भाषाएं तथा विभिन्न विभाओं का विकास। हिदी भाषा के विभिन्न रूप– 1. बोलचाल की भाषा 2. रचनात्मक भाषा 3. राष्ट्रभाषा, 4. राजभाषा 5. संपर्क भाषा 6. संचार भाषा।

हिंदी का शब्द भंडार– तत्सम, तद्भव, दे"ाज, आगत शब्दावली।

(ख) हिंदी साहित्य का इतिहास : आदिकाल, पूर्व मध्यकाल, उत्तर मध्यकाल और आधुनिक काल की सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, प्रमुख युग प्रवृत्तियां, वि"िाष्ठ रचनाकार, और उनकी प्रतिनिधि कृतियां, साहित्यिक वि"ाषताएं।

(ग) काव्यांग : काव्य का स्वरूप एवं प्रयोजन। रस के विभिन्न भेद, अंग विभावादि तथा उदाहरण।

प्रमुख पांच छंद : दोहा, सोरठा, चौपाई, कुंडलियां तथा सवैया।

अलंकार : शब्दालंकार–अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, पुनरुक्ति प्रका"ा।

अर्थालंकार : उपमा, रूपक, उत्पेक्षा, अति"ायोक्ति, भ्रांतिमान।

संदर्भ ग्रंथ :

1. हिंदी साहित्य का इतिहास–सं. डॉ. सुनील त्रिवेदी एवे बाबूलाल शुक्ल, प्रका"ाक– मप्र. उच्च ि"ाक्षा अनुदान आयोग
2. राजभाषा हिंदी –मलिक मोहम्द (प्रभात प्रका"ान दिल्ली)
3. हिंदी भाषा– डॉ. भोलानाथ तिवारी

अंक विभाजन :

आलाचनात्म्क प्र"न 44 अंक

लघु उत्तरीय प्र"न 16 अंक

15 वस्तुनिष्ठ/अतिलघु उत्तरीय प्र"न 15 अंक

कुल अंक 75

इकाई विभाजन

इकाई–1 हिंदी भाषा का स्वरूप–विकास (खंड–क)

इकाई–2 हिंदी का शब्द भंडार (खंड का का अंतिम भाग)।

इकाई–3 हिंदी साहित्य का इतिहास (खंड ख)

इकाई–4 काव्यांग रस, छंद एवं अलंकार (खंड ग) ।

इकाई–5 वस्तुनिष्ठ/ लघु उत्तरीय प्र"न (सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से।)

.....

शासकीय दिग्विजय स्व"ाासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव (छत्तीसगढ़)

हिन्दी विभाग

(अध्ययन मंडल दुर्ग वि"ावविद्यालय, दुर्ग एवं शासकीय दिग्विजय स"ाासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजनांदगांव द्वारा अनुमोदित पाठ्यक्रम)

स्नातकोत्तर हिन्दी

(सत्र–2018–19)

सेमेस्टर प्रणाली
एम. ए. पूर्वार्द्ध
(सेमेस्टर 1 और 2)

एम.ए. उत्तरार्द्ध
(सेमेस्टर 3 और 4)

डॉ. शंकर मुनि राय

(विभागाध्यक्ष)

शासकीय दिग्विजय स्व"ाासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव (छत्तीसगढ़)

हिन्दी विभाग

(अध्ययनमंडल दुर्ग वि"वविद्यालय, दुर्ग एवं शासकीय दिग्विजय स्व"ाासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजनांदगांव द्वारा अनुमोदित पाठ्यक्रम)

स्नातकोत्तर हिन्दी
(सत्र–2018–19)

सेमेस्टर प्रणाली
एम. ए. उत्तरार्द्ध
(सेमेस्टर 3 और 4)
सदस्य पाठ्यक्रम समिति :

- डॉ. राजन यादव (मनोनीत वि"ोषज्ञ)
- श्री थानसिंह वर्मा (मनोनीत वि"ोषज्ञ)
- श्री प्रवीण साहू (मनोनीत पूर्व छात्र)
- श्री सती"ा भट्टड़ (मनोनीत उद्योगपति)
- डॉ. चंद्र कुमार जैन(विभागीय प्राध्यापक)

- डॉ. बी. एन. जागृत (विभागीय प्राध्यापक)
- डॉ. शंकर मुनि राय (विभागाध्यक्ष)

प्रस्तावना तथा उद्दे"य

एम. ए. हिन्दी का पाठ्यक्रम अध्ययन मंडल दुर्ग वि"वविद्यालय दुर्ग एवं शासकीय दिग्विजय स्व"ाासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव द्वारा मनोनीत विषय वि"ोषज्ञ एवं विभागीय प्राध्यापकों द्वारा निर्मित पाठ्यक्रम समिति की सहमति से बनायी गई योजना के अनुसार स्वीकृत है। चूंकि महाविद्यालय को स्व"ाासी संस्था की मान्यता प्राप्त है, इसलिए पाठ्यक्रम निर्धारण में स्थानीय आव"यकता के अनुरूप पाठ्य–विषय का चयन किया जाना स्वाभाविक है। इसके लिए प्रत्येक सत्र में समिति की बैठक आयोजित कर पाठ्य–विषय की उपयोगिता संबंधी समीक्षा कर उसे अद्यतन किया जाता है।

एम. ए. हिन्दी के पाठ्यक्रम निर्धारण में इस बात का ध्यान रखा गया है कि इस विषय के विद्यार्थी को हिन्दी भाषा और साहित्य के संबंध में आधारभूत तथ्यों सहित उसके वर्तमान स्वरूप का व्यावहारिक ज्ञान हो। इसके लिए हिन्दी भाषा और उसके साहित्य के इतिहास को अध्ययन–अध्यापन का विषय बनाया गया है। बदलते परिवे"ा के साथ–साथ हिन्दी के साहित्यिक स्वरूप मे जो विधात्मक बदलाव आया है, उसको ध्यान में रखते हुए काव्य, कहानी, नाटक, निबंध, उपन्यास सहित चरितात्मक कृति को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है।

पाठ्यक्रम के तृतीय और चतुर्थ सेमेस्टर में विद्यार्थियों के स्व–चिंतन और भाषायी परख के लिए आलोचनात्मक पाठ्य–सामग्री शामिल है, वहीं अध्ययन के व्यावहारिक पक्ष की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए हिन्दी के प्रायोजनिक उपयोगिता और मीडिया परक लेखन और अनुवाद को अध्ययन–अध्यापन का विषय बनाया गया है।

क्षेत्रीयता और स्थानीयता को ध्यान में रखकर समिति ने विद्यार्थियों के लिए जनपदीय साहित्य के अन्तर्गत छत्तीसगढ़ी भाषा और साहित्य को एक प्र"नपत्र के रूप में पढ़ाने का निर्णय लिया है। इसी प्रकार विभाग के साहित्यिक इतिहास की गरिमा को बनाये रखने के उद्दे"य से इस विभाग के ऐतिहासिक साहित्यकार प्राध्यापक गजानन माधव 'मुक्तिबोध' और 'सरस्वती' संपादक डॉ. पदुम लाल पुन्ना लाल बख्शी सहित नगर के प्रमुख साहित्यकार मानस मर्मज्ञ डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र को पाठ्य विषय के अन्तर्गत प्रमुखता के साथ शामिल किया गया है।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं अंक विभाजन

एम.ए. हिन्दी का पाठ्यक्रम कुल चार सेमेस्टर में विभक्त है जिसमें प्रत्येक समेस्टर में चार–चार प्र"नपत्र 100–100 अंकों के लिए निर्धारित हैं। इन अंकों का विभाजन 80+20 है। अर्थात् 80 अंकों के लिए बाह्य–लिखित परीक्षा और 20 अंको का व्यावहारिक आंतरिक मूल्यांकन निर्धारित है।

एम.ए. हिन्दी के सभी कुल आठों प्र"नपत्र तीन–तीन खंडों–क, ख और ग में विभक्त हैं। प्रथम खंड में कुल बारह अंको के लिए 3–3 अंको के लिए पूरे पाठ्यक्रम से अति लघु उत्तरीय, कुल चार प्र"न पूछे जाएंगे जिनके विकल्प नहीं रहेंगे। दूसरे खंड में 20 अंकों के लिए पूरे पाठ्यक्रम से 5–5 अंकों के कुल चार प्र"न पूछ जाएंगे, जिनमें सभी प्र"नों के विकल्प रहेंगे। तीसरे खंड में पूरे पाठ्यक्रम से 48 अंको के लिए विकल्प सहित कुल चार प्र"नों के उत्तर लिखना अनिवार्य है।
आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित कुल 20 अंकों का निर्धारण निम्नानुसार है–
लिखित परीक्षा 20
परियोजना कार्य.....20
सेमिनार 20
उपस्थिति.....20
कुल प्राप्तांकों के योग को चार से विभाजित कर औसत अंक मान्य होगा।
अर्थात् 20+20+20+20 = 80\4 = 20

प्रथम सेमेस्टर

प्रथम प्र"नपत्र : आदिकाल एवं पूर्व–मध्यकाल (इतिहास	100 80+20
द्वितीयप्र"नपत्र : आदिकालीन एवं मध्यकालीन काव्य	100 80+20

तृतीय प्र"नपत्र : आधुनिक काव्य (छायावाद एवं पूर्ववर्ती काव्य) 100 80+20
चतुर्थ प्र"नपत्र : नाटक, एकांकी एवं चरितात्मक कृति 100 80+20

द्वितीय सेमेस्टर

प्रथमप्र"नपत्र : उत्तर मध्यकाल से आधुनिक काल (इतिहास) 100 80+20
द्वितीयप्र"नपत्र : मध्यकालीन काव्य 100 80+20
तृतीयप्र"नपत्र : प्रयोगवादी एवं प्रगतिवादी काव्य 100 80+20
चतुर्थ प्र"नपत्र : आधुनिक गद्य साहित्य (उपन्यास, निबंध एवं कहानी) 100 80+20

तृतीय सेमेस्टर

प्रथमप्र"नपत्र : साहित्य के सिद्धांत तथा आलोचना शास्त्र 100 80+20
द्वितीयप्र"नपत्र : भाषा विज्ञान 100 80+20
तृतीय प्र"नपत्र : प्रयोजन मूलक हिन्दी एवं पत्रकारिता 100 80+20
चतुर्थ प्र"नपत्र : भारतीय साहित्य 100 80+20

चतुर्थ सेमेस्टर

प्रथम प्र"नपत्र : हिन्दी आलोचना तथा समीक्षा शास्त्र 100 80+20
द्वितीय प्र"नपत्र :हिन्दी भा"ा 100 80+20
तृतीय प्र"नपत्र : मीडिया लेखन एवं अनुवाद 100 80+20
चतुर्थप्र"नपत्र : जनपदीय भाषा और साहित्य (छत्तीसगढ़ी) 100 80+20

.....

एम.ए. पूर्व–हिन्दी
प्रथम सेमेस्टर

प्रथम प्र"नपत्र : आदिकाल एवं पूर्व–मध्यकाल (इतिहास)

पूर्णांक 80+20=100

पाठ्य–विषय :

1. **आदिकाल : इतिहास, द"ान और साहित्येतिहास**– हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा, साहित्येतिहास के पुनर्लेखन की समस्याएं, काल विभाजन और नामकरण की समस्याएं।
2. **हिन्दी साहित्य के आदिकाल की पृश्ठभूमि :** वीरगाथा काल तथा रासोकाव्य, सिद्ध–नाथ एवं जैन साहित्य, साहित्यिक प्रवृत्तियां, काव्य धाराएं एवं प्रतिनिधि रचनाकार।
3. **पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) :** सांस्कृतिक चेतना और भक्ति आन्दोलन, भक्तिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियां, काव्यधाराएं–निर्गुण, सगुण भक्ति धाराएं, संतकाव्य की सामान्य प्रवृत्तियां।
4. **सूफी प्रेमाख्यानक काव्य :** प्रवृत्तियां, प्रेमाख्यानक परंपरा ओर हिन्दी में उसका विकास, सामान्य प्रवृत्तियां और दा"ानिक विचारधाराएं, उपलब्धियां।
5. लघु उत्तरीय प्र"न : (संपूर्ण पाठ्यक्रम से)
6. **अतिलघु उत्तरीय प्रश्न** : (संपूर्ण पाठ्यक्रम से)

अंक विभाजन

खंड–क : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 3–3 अंको के 4 प्र"न 3x4=12
खंड–ख : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 5–5 अंको के 4 प्र"न 5x4=20
खंड–ग : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 12–12 अंको के 4 प्र"न 12x4=48

सहायक ग्रंथ / पुस्तकें :

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास– आचार्य रामचंद्र शुक्ल
2. हिन्दी साहित्य का आदिकाल– हजारी प्रसाद द्विवेदी
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास– डॉ. नगेनद्र

4. आदिकालीन हिन्दी साहित्य–डॉ. शंभुनाथ पाण्डेय
5. आदिकालीन हिन्दी साहित्य की सांस्कृतिक पीठिका–डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी

नाम और हस्ताक्षर : सदस्य पाठ्यक्रम समिति

1..... **2**.....

3..... **4**. .....

एम.ए. पूर्व–हिन्दी
प्रथम सेमेस्टर

द्वितीय प्र"नपत्र : आदिकालीन एवं मध्यकालीन काव्य

पूर्णांक 80+20 =100

पाठ्य–विषय : व्याख्या और विवेचना के लिए निम्नांकित तीन कवियों का अध्ययन–अध्यापन अपेक्षित है–

1. **चंदबरदाई** : पृथ्वीराजरासो–"ा"ावृत्ता विवाह खंड, संपादक : आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ. नामवर सिंह
2. **कबीर ग्रंथावली** : सं. डॉ. श्याम सुंदर दास (50 साखियां तथा 25 पद)
   पद कमांक–11, 16, 24, 27, 40, 45, 49, 60, 64,70, 72, 75,79, 89, 93, 98, 99, 100, 101, 103, 110, 111, 135, 268
   साखियां–गुरूदेव और अंग 1–20, सुमिरण कौ अंग 1–10 विरह कौ अंग 1–10 ज्ञान विरह कौ अंग 1–10 परचा कौ अंग।
   पद्मावत : मलिक मोहम्मद जायसी संपादक– आचार्य रामचंद्र शुक्ल (नागमती विरह खंड एवं सिंहल द्वीपखंड)
3. **द्रुतपाठ के रचनाकार** : इसके अन्तर्गत निम्नलिखित पांच कवियों और उनकी रचनाओं का अध्ययन किया जाएगा– अमीर खुसरो, मीराबाई, रहीम, रैदास और रसखान।

अंक विभाजन

खंड–क : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 3–3 अको के 4 प्र"न	3x4=12
खंड–ख : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 5–5 अंको के 4 प्र"न	5x4=20
खंड–ग : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 12–12 अंको के 4 प्र"न	12x4=48

सहायक ग्रंथ / पुस्तकें :

1. चंदबरदाई–डॉ. विपिन बिहारी द्विवेदी
2. कबीर की विचारधारा–डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत
3. प्रमुख प्राचीन कवि–डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना
4. जायसी की वि"ाष्ट शब्दावली– डॉ.इंदिरा कुमारी सिंह
5. मलिक मोहम्मद जायसी और उनका काव्य–डॉ. ि"वसहाय पाठक
6. अमीर खुसरो और उनका साहित्य–डॉ. भोलानाथ तिवारी

नाम और हस्ताक्षर : सदस्य पाठ्यक्रम समिति

1..... **2**.....

3..... **4**. .....

एम.ए. पूर्व–हिन्दी

प्रथम सेमेस्टर

तृतीय प्र"नपत्र : आधुनिक काव्य (छायावाद एवं पूर्ववर्ती काव्य)

पूर्णांक 80+20=100

पाठ्य–विषय : व्याख्या और विवेचना के लिए निम्नांकित तीन कवियों का अध्ययन–अध्यापन अपेक्षित है–

1. मैथिली"ारण गुप्त : 'साकेत' का नवम सर्ग
2. जयषंकर प्रसाद : 'कामायनी' का चिन्ता, श्रद्धा और इड़ा सर्ग
3. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला : 'राम की 'ाक्तिपूजा', महादेवी वर्मा– जाग तुझको दूर जाना, जो तुम आ जाते एक बार।
4. **द्रुतपाठ के रचनाकार :** इसके अन्तर्गत निम्नलिखित पांच कवियों और उनकी रचाओं का अध्ययन किया जाएगा। अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', जगन्नाथदास 'रत्नाकर', मुकुटधर पाण्डेय, सुमित्रा नन्दन पंत, और हरिवं"ाराय 'बच्चन'।

अंक विभाजन

खंड–क : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 3–3 अंको के 4 प्र"न	3x4=12
खंड–ख : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 5–5 अंको के 4 प्र"न	5x4=20
खंड–ग : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 12–12 अंको के 4 प्र"न	12x4=48

सहायक ग्रंथ / पुस्तकें :

1. साकेत एक अध्ययन–डॉ. नगेन्द्र
2. कवि निराला–आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी
3. निराला की साहित्य साधना–डॉ. रामविलास शर्मा
4. नया साहित्य नये प्र"न– आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी
5. कामायनी एक पुनर्विचार–मुक्तिबोध
6. प्रसाद का काव्य–प्रेम"ांकर
7. हिन्दी साहित्य आधुनिक परिदृ"य–अज्ञेय
8. हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ. नगेन्द्र

नाम और हस्ताक्षर : सदस्य पाठ्यक्रम समिति

1..... **2**.....

3..... **4**. .....

एम.ए. पूर्व–हिन्दी
प्रथम सेमेस्टर

चतुर्थ प्र"नपत्र : आधुनिक गद्य साहित्य (नाटक, एकांकी एवं चरितात्मक कृति)

पूर्णांक 80+20=100

पाठ्य–विषय :

1. नाटक : क–चंद्रगुप्त–जय"ांकर प्रसाद ख–आधे–अधूरे– मोहन राके"ा
2. एकांकी : क– औरंगजेब की आखिरी रात–रामकुमार वर्मा ख– एक दिन–लक्ष्मीनारायण मिश्र ग–स्ट्राइक–भुवने"वर घ–तौलिए–उपेन्द्रनाथ अ"क च–मम्मी ठकुराईन–लक्ष्मीनारायण लाल
3. चरितात्मक कृति : पथ के साथी–महादेवी वर्मा (केवल दो–निराला भाई, सुभद्रा)
4. द्रुतपाठ के रचनाकार : जगदी"ाचंद्र माथुर, शंकर शेष, अमृतलाल बेगड़, विभु खरे, हबीब तनवीर।
5. अति लघु उत्तरीय प्र"न (संपूर्ण पाठ्यक्रम से)

अंक विभाजन

खंड–क : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 3–3 अंको के 4 प्र"न	3x4=12

खंड–ख : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 5–5 अंको के 4 प्र"न 5x4=20
खंड–ग : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 12–12 अंको के 4 प्र"न 12x4=48

सहायक ग्रंथ / पुस्तकें :

1. हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास–डॉ. द"ारथ ओझा
2. हिन्दी नाटक: सिद्धांत और विवेचना–डॉ. गिरी"ा रस्तोगी
3. हिन्दी नाटक : पुनर्मूल्यांकन–डा. सत्येन्द्र तनेजा
4. प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन–जगन्ना प्रसाद शर्मा
5. हिन्दी एकांकी : उद्भव और विकास–रामचरण महेन्द्र
6. हिन्दी रंगमंच : द"ाा और दि"ाा– जयदेव तनेजा

नाम और हस्ताक्षर : सदस्य पाठ्यक्रम समिति

1..... **2**.....

3..... **4**. .....

एम.ए. पूर्व–हिन्दी
द्वितीय सेमेस्टर

प्रथम प्र"नपत्र : उत्तर मध्यकाल से आधुनिक काल (इतिहास)

पूर्णांक 80+20=100

पाठ्य–विषय :

1. **उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल)** : काल सीमा, नामकरण, विविध काव्य धाराएं–रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीतिमुक्त
2. **आधुनिक काल** : सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृ"ठभूमि, 1857 की राज्यक्रांति एवं पुनर्जागरण, भारतेन्दुयुग–प्रमुख साहित्यकार, साहित्य एवं साहित्यिक विषे"ाताएं।
3. **द्विवेदी युग** : प्रमुख साहित्यकार एवं साहित्यिक वि"ोषताएं। छायावाद :नामकरण और प्रवृत्तियां, प्रमुख साहित्यकार एवं साहित्यिक विषे"ाताएं। छायावादोत्तर काल : प्रवृत्तियां, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, नवगीतवाद तथा समकालीन कविता, स्वच्छंदतावाद का सामान्य परिचय।
4. **हिन्दी गद्य का विकास** : आधुनिक काल, गद्य साहित्य के विविध रूप–उद्भव और विकास, उपन्यास व कहानी का उद्भव और विकास, सामान्य प्रवृत्तियां, हिन्दी निबंध : विकास और प्रवृत्तियां, नाटक : उद्भव–विकास और सामान्य प्रवृत्तियां। गीतिनाटक : परिचयात्मक विवेचन।
5. **लघु उत्तरीय प्र"न (संपूर्ण पाठ्यक्रम से)**
6. **अति लघु उत्तरीय प्र"न संपूर्ण पाठ्यक्रम से)**

अंक विभाजन

खंड–क : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 3–3 अंको के 4 प्र"न 3x4=12
खंड–ख : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 5–5 अंको के 4 प्र"न 5x4=20
खंड–ग : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 12–12 अंको के 4 प्र"न 12x4=48

सहायक ग्रंथ / पुस्तकें :

1. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां– डॉ. नामवर सिंह

2. हिन्दी साहित्य की बीसवीं शताब्दी–नन्ददुलारे वाजपेयी
3. गद्य की विविध विधाएं–डॉ. बापूराव देसाई
4. हिन्दी उपन्यास की प्रवृत्तियां–डॉ. शि"ाभूषण सिंह
5. हिन्दी नाटक : उद्‌भव और विकास–डॉ. द"ारथ ओझा

नाम और हस्ताक्षर : सदस्य पाठ्‌यक्रम समिति

1..... **2**.....

एम.ए. पूर्व–हिन्दी
द्वितीय सेमेस्टर

द्वितीय प्र"नपत्र : मध्यकालीन काव्य

पूर्णांक 80+**20=100**

पाठ्‌य–विषय :

नोट : व्याख्या और समीक्षा के लिए निम्नलिखित तीन कवियों का अध्ययन–अध्यापन निर्धारित है–

1. **सूरदास** : भ्रमरगीत सार–संपादक–आचार्य रामचंद्र शुक्ल
   पद 1–10, 21–30, 51–70, 81–90 कुल 50 पद।
2. **तुलसीदास** : श्रीरामचरित मानस–सुंदरकांड–गीताप्रेस गोरखपुर
3. **बिहारी** : बिहारी रत्नाकर–संपादक–जगन्नाथदास रत्नाकर–प्रारंभिक 100 दोहे
4. **द्रुतपाठ** : के"ावदास, भूषण, पद्‌माकर, देव और चिंतामणि की रचनाओं की ि"ाल्पगत वि"ोषताएं।

अंक विभाजन

खंड–क : संपूर्ण पाठ्‌यक्रम से 3–3 अंको के 4 प्र"न	3x4=12
खंड–ख : संपूर्ण पाठ्‌यक्रम से 5–5 अंको के 4 प्र"न	5x4=20
खंड–ग : संपूर्ण पाठ्‌यक्रम से 12–12 अंको के 4 प्र"न	12x4=48

सहायक ग्रंथ / पुस्तकें :

1. बिहारी–डॉ. वि"वनाथ प्रसाद मिश्र
2. तुलसीदास ओर उनका युगसंदर्भ–डॉ. भगीरथ मिश्र
3. सूरदास के काव्य का मूल्यांकन–डॉ. रामरतन भटनागर
4. सूरदास–डॉ. हरबं"ा लाल वर्मा
5. तुलसी साहित्य के नये संदर्भ–डॉ. एल. एन. दुबे

नाम और हस्ताक्षर : सदस्य पाठ्‌यक्रम समिति

1..... **2**.....

3..... **4**.....

एम.ए. पूर्व–हिन्दी
द्वितीय सेमेस्टर

तृतीय प्र"नपत्र : प्रयोगवादी एवं प्रगतिवादी काव्य

पूर्णांक 80+20=100

पाठ्य–विषय :

1. **सच्चिदाननद हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'** : कविताएं–नदी के द्वीप, असाध्य वीणा, बावरा अहेरी, कलगी बाजरे की, यह दीप अकेला, सोन मछली, उधार।
2. **गजानन माधव 'मुक्तिबोध'** : कविता 'अंधरे में'।
3. **नागार्जुन** : कविताएं–बसंत की अगवानी, कोई आये तुमसे सीखे, षिषिर, वि"ा कन्या, तो फिर क्या हुआ, यह तुम थी, कोयल आज बोली है, शासन की बंदूक, सिंदूर तिलकित भाल, अकाल और उसके बाद, बादल को घिरते देखा है।
4. **द्रुतपाठ** : पांच कवि–केदार नाथ अग्रवाल, त्रिलोचन शास्त्री, भवानी प्रसाद मिश्र, रघुवीर प्रसाद
   प्रमोद वर्मा।

अंक विभाजन

खंड–क : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 3–3 अंको के 4 प्र"न	3x4=12
खंड–ख : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 5–5 अंको के 4 प्र"न	5x4=20
खंड–ग : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 12–12 अंको के 4 प्र"न	12x4=48

सहायक ग्रंथ / पुस्तकें :

1. मुक्तिबोध की काव्य प्रकिया–अ"ोक चक्रधर
2. अज्ञेय का रचना संसार–डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी
3. कविता की तीसरी आंख–डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय
4. नागार्जुन का रचना संसार–विजय बहादुर सिंह
5. कविता की संगत–विजय कुमार

नाम और हस्ताक्षर : सदस्य पाठ्यक्रम समिति

1..... **2**.....

3..... **4**.....

एम.ए. पूर्व–हिन्दी
द्वितीय सेमेस्टर

चतुर्थ प्र"नपत्र : आधुनिक गद्य साहित्य (उपन्यास, निबंध और कहानी)

पूर्णांक 80+20=100

पाठ्य–विषय :

1. **उपन्यास** : गोदान–प्रेमचंद, मैला आंचल–फणी"वरनाथ 'रेणु'
2. **निबंध** : चढ़ती उमर–बालकृष्ण भट्ट
   कविता क्या है–आचार्य रामचंद्र शुक्ल
   कुटज– हजारी प्रसाद द्विवेदी
   उस अमराई ने राम–राम कही है–विद्यानिवास मिश्र
   वैष्णव की फिसलन– हरि"ांकर परसाई
3. **कहानी** : उसने कहा था– चंद्रधर 'ार्मा गुलेरी, पुरस्कार– जय"ांकर प्रसाद, सुजान भगत–प्रेमचंद
   झलमला– पदुमलाल पुन्ना लाल बख्शी, परिदे–निर्मल वर्मा
4. **द्रुतपाठ के रचनाकार** : ठाकुर जगमोहन सिंह पं. माधवराव सप्रे, डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र, मुक्तिबोध राजेन्द्र यादव

अंक विभाजन

खंड–क : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 3–3 अंको के 4 प्र”न 3x4=12
खंड–ख : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 5–5 अंको के 4 प्र”न 5x4=20
खंड–ग : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 12–12 अंको के 4 प्र”न 12x4=48

सहायक ग्रंथ / पुस्तकें :

1. प्रेमचंद और उनका युग–रामबिलास शर्मा
2. गोदान के अध्ययन की समस्याएं–डॉ. गोपाल राय
3. हिन्दी उपन्यास : उद्भव और विकास–सुरेष सिन्हा
4. हिन्दी कहानी : उद्भव और विकास–सुरे”ा सिन्हा
5. कहानी : नयी कहानी–डॉ. नामवर सिंह।

नाम और हस्ताक्षर : सदस्य पाठ्यक्रम समिति

1.. **2...**

3.. **4...**

एम.ए. अंतिम–हिन्दी
तृतीय सेमेस्टर

प्रथम प्र”नपत्र : साहित्य के सिद्धांत तथा आलोचना भाास्त्र

पूर्णांक 80+20=100

पाठ्य–विषय :

1. **भारतीय काव्यशास्त्र :क.** काव्य लक्षण, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन, और काव्य के प्रकार। **ख.** रस सिद्धांत, रस निष्पत्ति, रस का स्वरूप, साधारणीकरण, रस के अंग।
2. **अलंकार सिद्धांत** : रीति सिद्धांत, वक्रोक्ति सिद्धांत, ध्वनि सिद्धांत और औचित्य सिद्धांत।
3. **पा”चात्य काव्यशास्त्र** : प्लेटो–काव्य सिद्धांत, अरस्तू– अनुकरण सिद्धांत, विरेचन सिद्धांत, लौंजायनस–उदात्त की अवधारण।
4. **मैथ्यू ऑर्नाल्ड** : कला की अवधारणा, टी.एस. इलियट–कला की निर्वैक्तिकता, कॉलरिज–कल्पना सिद्धांत, स्वच्छंदतावाद, मार्क्सवाद।
5. पूरे पाठ्यक्रम से लघु उत्तरीय प्र”न।
6. संपूर्ण पाठ्यक्रम से अतिलघु उत्तरीय प्र”न।

अंक विभाजन

खंड–क : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 3–3 अंको के 4 प्र”न 3x4=12
खंड–ख : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 5–5 अंको के 4 प्र”न 5x4=20
खंड–ग : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 12–12 अंको के 4 प्र”न 12x4=48

सहायक ग्रंथ / पुस्तकें :

1. भारतीय एवं पा”चात्य काव्य सिद्धांत–गणपतिचंद्र गुप्त
2. पा”चात्य काव्य”ाास्त्र : इतिहास, सिद्धांत और वाद–भगीरथ मिश्र
3. भारतीय काव्य”ाास्त्र की भूमिका–डॉ. नगेन्द्र
4. भारतीय और पा”चात्य काव्य”ाास्त्र–मूलजी भाई
5. पा”चात्य काव्य–द”ान–डॉ. शंकर मुनि राय

नाम और हस्ताक्षर : सदस्य पाठ्यक्रम समिति

1..... 2.....

3..... 4.....

5..... 6.....

एम.ए. अंतिम–हिन्दी
तृतीय सेमेस्टर

द्वितीय प्र"नपत्र : भाशा विज्ञान

पूर्णांक 80+20100

पाठ्य–विषय :

1. **भाशा और भाशा विज्ञान** : भाषा की परिभाषा और अभिलक्षण, भाषा व्यवस्था और भाषा व्यवहार, भाषा संरचना। भाषा विज्ञान– स्वरूप एवं व्याप्ति, अध्ययन की दि"ाएं–वर्णनात्मक और तुलनात्मक।
2. **स्वन प्रकिया** : स्वन विज्ञान का स्वरूप और शाखाएं, वाग्वयव और उनके कार्य, स्वन की अवधारणा और वर्गाकरण, स्वन गुण, स्वनिक परिवर्तन। स्वनिम विज्ञान का स्वरूप, स्वनिम की अवधारणा और स्वनिम के भेद।
3. **व्याकरण** : रूप विज्ञान का स्वरूप और शाखाएं, रूपिम की अवधारणा और भेद–मुक्त–आबद्ध, अर्थद"ाी और संबंधद"ाी, संबंधद"ाी रूपिम के भेद और प्रकार्य। वाक्य के भेद , वाक्य वि"ले"ाण, निकटस्थ अवयव वि"लेषण।
4. **अर्थ विज्ञान** : अर्थ की अवधारणा, शब्द और अर्थ का संबंध, पर्यायता, अनेकार्थता, विलोमता, अर्थपरिवर्तन।
5. पूरे पाठ्यकम से लघु उत्तरीय प्र"न।
6. संपूर्ण पाठ्यकम से अतिलघु उत्तरीय प्र"न।

अंक विभाजन

खंड–क : संपूर्ण पाठ्यकम से 3–3 अंको के 4 प्र"न	3x4=12
खंड–ख : संपूर्ण पाठ्यकम से 5–5 अंको के 4 प्र"न	5x4=20
खंड–ग : संपूर्ण पाठ्यकम से 12–12 अंको के 4 प्र"न	12x4=48

सहायक ग्रंथ / पुस्तकें :

1. सामान्य भाषा विज्ञान–डॉ. बाबूराम सक्सेना
2. भाषा विज्ञान–डॉ. भोलानाथ तिवारी
3. भाषा"ाास्त्र की रूपरेखा–उदयनारायण तिवारी
4. हिन्दी और उसका संक्षिप्त इतिहास–भोलानाथ तिवारी
5. भाषा विज्ञान के सिद्धांत और हिन्दी भाषा–द्वारिका प्रसाद मिश्र

नाम और हस्ताक्षर : सदस्य पाठ्यक्रम समिति

1..... 2.....

एम.ए. अंतिम–हिन्दी
तृतीय सेमेस्टर

तृतीय प्र"पत्र : प्रयोजनमूलक हिन्दी एवं पत्रकारिता

पूर्णांक 80+20=100

पाठ्य–विषय :

1. **हिन्दी के विविध रूप** : सर्जनात्मक भाषा, संचार भाषा, राजभाषा, माध्यम भाषा, कार्यालयीन हिन्दी के प्रमुख प्रकार्य–प्रारूपण, पत्र लेखन,संक्षेपण, पल्लवन टिप्पणी।
2. **पारिभाशिक भाब्दावली** : स्वरूप एवं महत्व, पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के सिद्धांत, भाषा विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली। हिन्दी कम्प्यूटर– परिचय, उपयोगिता क्षेत्र, वेब पेज पब्लि"िंग परिचय।
3. **इंटरनेट** : संपर्क उपकरणों का परिचय, प्रकार्यात्मक रख–रखाव एवं इंटरनेट समय मित्तव्ययिता के सूत्र। इंटरनेट एक्सप्लोरर अथवा नेट स्केप। हिन्दी साप्टवेयर पैकेज। पत्रकारिता का स्वरूप एवं प्रकार, हिन्दी पत्रकारिता का संक्षिप्त इतिहास।
4. **समाचार लेखन** : समाचार लेखन कला, संपादन के आधारभूत तत्व, व्यावहारिक प्रूफ"ोधन, शीर्षक संरचना, लीड, इंट्रो एवं शीर्षक, संपादकीय लेखन, पृष्ठसज्जा, साक्षात्कार, पत्रकारवार्त्ता एवं प्रेस प्रबंधन, प्रमुख प्रेस कानून एवं आचार संहिता।
5. पूरे पाठ्यक्रम से लघु उत्तरीय प्र"न।
6. संपूर्ण पाठ्यक्रम से अतिलघु उत्तरीय प्र"न।

अंक विभाजन

खंड–क : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 3–3 अंको के 4 प्र"न	3x4=12
खंड–ख : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 5–5 अंको के 4 प्र"न	5x4=20
खंड–ग : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 12–12 अंको के 4 प्र"न	12x4=48

सहायक ग्रंथ / पुस्तकें :

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी– डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी
2. हिन्दी पत्रकारिता–कृष्ण बिहारी मिश्र
3. प्र"ाासनिक हिन्दी–पुष्पा कुमारी
4. कम्प्यूटर के भाषिक अनुप्रयोग–विजय मल्होत्रा
5. कम्प्यूटर एप्लीके"ान–गौरव अग्रवाल

नाम और हस्ताक्षर : सदस्य पाठ्यक्रम समिति

1..... **2**.....

एम.ए. अंतिम–हिन्दी
तृतीय सेमेस्टर

चतुर्थ प्र"नपत्र : भारतीय साहित्य

पूर्णांक 80+**20=100**

पाठ्य–विषय :

1. भारतीय साहित्य का स्वरूप एवं मूल चेतना। भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएं।
2. भारतीय साहित्य में वर्तमान भारत का बिम्ब। हिन्दी साहित्य में भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति
3. हिन्दीतर साहित्य का अध्ययन । इसके निम्नलिखित तीन भाग हैं–
   क–दक्षिणात्य भाषा वर्ग में मलयालम
   ख–पूर्वांचल भाषा वर्ग में बंगला उपन्यास– 'अग्निगर्भ'–महा"वेता देवी
   ग–पि"चमोत्तर भाषा वर्ग में मराठी

निर्दे"ा : प्रत्येक विद्यार्थी के लिए आव"यक है कि अध्ययन के लिए वह इन तीनों में से किसी एक का चयन करे जो उसके भाषा क्षेत्र से भिन्न हो।

4. इस खंड के अंतर्गत तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षित है। इसमें किसी एक हिन्दीतर भाषा साहित्य के साथ हिन्दी को जोड़कर अध्ययन करना आव"यक होगा।
5. पूरे पाठ्यक्रम से लघु उत्तरीय प्र"न।
6. संपूर्ण पाठ्यक्रम से अतिलघु उत्तरीय प्र"न।

अंक विभाजन

खंड–क : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 3–3 अंको के 4 प्र"न 3x4=12
खंड–ख : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 5–5 अंको के 4 प्र"न 5x4=20
खड–ग : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 12–12 अंको के 4 प्र"न 12x4=48

सहायक ग्रंथ / पुस्तकें :

1. 'अग्निगभ'–महा"वेता देवी
2. मराठी भाषा और साहित्य–राजमल वोरा
3. बंगला भाषा और साहित्य का इतिहास–भारतीय भाषा संस्थान, इलाहाबाद
4. भारतीय साहित्य–डॉ. नगेन्द्र
5. मलयालम साहित्यकारों से साक्षत्कार–प्रो. आर. सुरेन्द्रन

नाम और हस्ताक्षर : सदस्य पाठ्यक्रम समिति

1..... **2**.....

एम.ए. अंतिम–हिन्दी
चतुर्थ सेमेस्टर

प्रथम प्र"नपत्र : हिन्दी आलोचना तथा समीक्षा शास्त्र

पूर्णांक 80+20=100

पाठ्य–विषय :

1. मनोवि"लेषणवाद, अस्तित्ववाद, अभिजात्यवाद, स्वच्छंदतावाद, अभिव्यंजनावाद, मार्क्सवाद। आधुनिक समीक्षा की वि"ोष्ट प्रवृत्तियां, संरचनावाद, शैलीविज्ञान, उत्तरआधुनिकता।
2. हिन्दी कवि–आचार्यें का काव्य शास्त्रीय चिंतन, लक्षण–काव्य परंपरा। शास्त्रीय आचार्य– रामचंद्र शुक्ल, नन्ददुलारे वाजपेयी, हजारी प्रसाद द्विवेदी, रामविलास शर्मा, के"ाव, देव।
3. आधुनिक हिन्दी आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियां–"ाास्त्रीय आलोचना, ऐतिहासिक आलोचना, मनोवि"लेणवादी आलोचना, सौंदर्य"ाास्त्रीय आलोचना, शैली वैज्ञानिक आलोचना।
4. व्यावहारिक समीक्षाः निर्धारित काव्यां"ा की स्व–विवेकानुसार व्याख्या–'वह तोड़ती पत्थर'–निराला, 'भूल–गलती'–मुक्तिबोध, 'नदी के द्वीप'–अज्ञेय, 'अकाल और उसके बाद'–नागार्जुन, 'हम भारत के हैं'–त्रिलोचन, 'रामदास'–रघुवीर सहाय, 'महामहिम'–श्रीकांत वर्मा।
5. पूरे पाठ्यक्रम से लघु उत्तरीय प्र"न।
6. संपूर्ण पाठ्यक्रम से अतिलघु उत्तरीय प्र"न।

अंक विभाजन

खंड–क : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 3–3 अंको के 4 प्र"न 3x4=12
खंड–ख : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 5–5 अंको के 4 प्र"न 5x4=20
खंड–ग : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 12–12 अंको के 4 प्र"न 12x4=48

सहायक ग्रंथ / पुस्तकें :

1. शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धांत भाग–1 एवं 2–गोविन्द त्रिगुणायत
2. हिन्दी आलोचना : उद्भव और विकास–डॉ. भगवत स्वरूप मिश्र
3. हिन्दी आलोचना के आधार–स्तंभ–रामे"वर खंडेलवाल
4. हिन्दी आलोचना का विकास–नन्दकि"ाोर नवल
5. अस्तित्ववाद : किर्कगार्द से कामू तक–योगेन्द्र शाही

नाम और हस्ताक्षर : सदस्य पाठ्यक्रम समिति

1..... **2**.....

एम.ए. अंतिम–हिन्दी
चतुर्थ सेमेस्टर

द्वितीय प्र"नपत्र : भाशा विज्ञान

पूर्णांक 80+20=100

पाठ्य–विषय :

1. **हिन्दी की ऐतिहासिक पृश्ठभूमि** : प्राचीन भारतीय आर्य भाषाएं–वैदिक तथा लौकिक संस्कृत और उसकी वि"ोषताएं। मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाएं–पालि, प्राकृत, शौरसेनी, अर्धमागधी, अपभ्र"ा, और उनकी वि"ोषताएं। आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएं और उनका वर्गीकरण।
2. **हिन्दी का भौगोलिक विस्तार** : हिन्दी की उपभाषाएं, पि"चमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी, पहाड़ी और उनकी बोलियां। खड़ी बोली, ब्रज और अवधी की वि"ोषताएं।
3. **हिन्दी के विविध रूप** : संपर्क भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा के रूप में हिन्दी, माध्यम भाषा, संचार भाषा, हिन्दी की संवैधानिक स्थिति।
4. **हिन्दी में कम्प्यूटर सुविधाएं** : आंकड़ा संसाधन और शब्द संसाधन, वर्तनी शोधन, म"ाीनी अनुवाद, हिन्दी भाषा ि"ाक्षण। देवनागरी लिपि : वि"ोषताएं और मानकीकरण।
5. पूरे पाठ्यक्रम से लघु उत्तरीय प्र"न।
6. संपूर्ण पाठ्यक्रम से अतिलघु उत्तरीय प्र"न।

अंक विभाजन

खंड–क : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 3–3 अंको के 4 प्र"न	3x4=12
खंड–ख : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 5–5 अंको के 4 प्र"न	5x4=20
खंड–ग : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 12–12 अंको के 4 प्र"न	12x4=48

सहायक ग्रंथ / पुस्तकें :

1. हिन्दी भाषा का संक्षिप्त इतिहास– भोलानाथ तिवारी
2. हिन्दी और उसकी विविध बोलियां–प्रो. दीपचंद जैन
3. राष्ट्रभाषा हिन्दी : समस्याएं और समाधान–देवेन्द्रनाथ शर्मा
4. नागरी लिपि और हिन्दी–अनन्त चौधरी
5. सामान्य भााषा विज्ञान–बाबूराम सक्सेना

नाम और हस्ताक्षर : सदस्य पाठ्यक्रम समिति

1..... **2**.....

3..... **4**.....

एम.ए. अंतिम–हिन्दी
चतुर्थ सेमेस्टर

तृतीय प्र"नपत्र : मीडिया लेखन और अनुवाद

पूर्णांक 80+20=100

पाठ्य–विषय :

1. **मीडिया लेखन** : जनसंचार प्रौद्योगिकी एवं चुनौतियां, विभिन्न जनसंचार माध्यमों का स्वरूप–मुद्रण, श्रवण, दृ"य–श्रव्य, इंटरनेट, श्रवण–माध्यम,(रेडियो), मौखिक भाषा की प्रकृति। समाचार लेखन और वाचन, रेडियो नाटक, उद्घोषणा लेखन, विज्ञापन लेखन, फीचर तथा रिपोर्ताज।
2. **दृ"य–श्रव्य माध्यम** :(फिल्म, टेलीविजन एवं रेडियो) दृ"य–माध्यमों में भाषा की प्रकृति, दृ"य–श्रव्य सामग्री का सामंजस्य, पा"र्व वाचन,। पटकथा लेखन, टेली–ड्रामा, संवाद लेखन, साहित्यिक विधाओं का दृ"य माध्यमों में रूपांतरण, विज्ञापन की भाषा।
3. **अनुवाद : सिद्धांत एवं व्यवहार** : अनुवाद का स्वरूप, क्षेत्र, प्रक्रिया एवं प्रविधि। हिन्दी की प्रयोजनीयता में अनुवाद की भूमिका। कार्यालयीन हिन्दी और अनुवाद, जनसंचार माध्यमों का अनुवाद, विज्ञापन में अनुवाद, वैचारिक साहित्य का अनुवाद, वाणिज्यिक अनुवाद, वैज्ञानिक तकनीकी तथा प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में अनुवाद, विधि साहित्य की हिन्दी और अनुवाद।
4. **व्यावहारिक अनुवाद** : अभ्यास, कार्यालयीन अनुवाद, कार्यालयीन और प्र"ाासनिक शब्दावली, प्र"ाासनिक नियुक्तियां, पदनाम, विभागीय पत्रों का अनुवाद, पदनामों–अनुभागों–दस्तावेजों, प्रतिवेदनों के अनुवाद। साहित्यिक अनुवाद के सिद्धांत एवं व्यवहार। कविता, कहानी, नाटक, सारानुवाद एवं दुभाषिया प्रविधि।
5. पूरे पाठ्यक्रम से लघु उत्तरीय प्र"न।
6. संपूर्ण पाठ्यक्रम से अतिलघु उत्तरीय प्र"न।

अंक विभाजन

खंड–क : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 3–3 अंको के 4 प्र"न	3x4=12
खंड–ख : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 5–5 अंको के 4 प्र"न	5x4=20
खंड–ग : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 12–12 अंको के 4 प्र"न	12x4=48

सहायक ग्रंथ / पुस्तकें :

1. जनसंचार एवं पत्रकारिता–प्रवीण दीक्षित
2. पत्रकारिता का इतिहास एवं जनसंचार माध्यम–डॉ. संजीव भागवंत
3. पत्रकारिता के विविध आयाम–वेद प्रका"ा वैदिक
4. अनुवाद के सिद्धांत–सुरे"ा कुमार
5. दूरद"र्न : हिन्दी के प्रयोजनमूलक विविध प्रयोग–कृष्ण कुमार रत्तू

नाम और हस्ताक्षर : सदस्य पाठ्यक्रम समिति

1..... **2**.....

3..... **4**.....

एम.ए. अंतिम–हिन्दी
चतुर्थ सेमेस्टर

चतुर्थ प्र"नपत्र : जनपदीय भाशा और साहित्य (छत्तीसगढ़ी)

पूर्णांक 80+20=100

पाठ्य–विषय :

1. छत्तीसगढ़ी भाषा : भौगोलिक सीमा, नामकरण, छत्तीसगढ़ी के क्षेत्रीय भेद, व्याकरण के अंगोपांग।
2. छत्तीसगढ़ी साहित्य की युगप्रवृत्तियां और इतिहास।
3. छत्तीसगढ़ी कवि एवं कविताएं :
   क– सुंदरलाल शर्मा– छत्तीसगढ़ी दान–लीला के अं"ा ख–मुकुटधर पांडेय–मेघदूत का छत्तीसगढ़ी अनुवाद ग–हरि ठाकुर– देवारी गीत, बादर गीत, आज हवा काबर कुनकुन हे। घ–डॉ. नगेन्द्र देव वर्मा– दुनिया अठवारी बाजार हे, उसल जाही, छत्तीसगढ़ो महिमा।
4. छत्तीसगढ़ी नाटक एवं उपन्यास : नाटक– करमछड़हा–खूबचंद बघेल, उपन्यास– आवा–परदे"ाीराम वर्मा
5. द्रुतपाठ के रचनाकार : लखनलाल गुप्ता, लक्ष्मण मस्तूरिया, केयूर भूषण, कपिल नाथ क"यप, लोचन प्रसाद पाण्डेय, कुंज बिहारी चौबे, पवन दीवान, कोदूराम दलित।
6. संपूर्ण पाठयक्रम से अतिलघु उत्तरीय प्र"न।

अंक विभाजन

खंड–क : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 3–3 अंको के 4 प्र"न	3x4=12
खंड–ख : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 5–5 अंको के 4 प्र"न	5x4=20
खंड–ग : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 12–12 अंको के 4 प्र"न	12x4=48

सहायक ग्रंथ / पुस्तकें :

1. जनपदीय भाषा और साहित्य– संपादक– सत्यभामा आडिल
2. छत्तीसगढ़ी भाषा का उद्‌भव और विकास– डॉ. नरेन्द्र देव वर्मा
3. छत्तीसगढ़ी भाषा का शास्त्रीय अध्ययन– डॉ. शंकर शेष
4. प्राचीन छत्तीसगढ़ी बोली–प्यारेलाल गुप्त
5. छत्तीसगढ़ी, हल्बी, भतरी भाषाओं का भाषा वैज्ञानिक अध्यय–भालचंद्र राव तैलंग

नाम और हस्ताक्षर : सदस्य पाठ्यक्रम समिति

1..... **2.** .....

3..... **4**.....

2017.18

चतुर्थ /वैकल्पिक प्र"नपत्र

(साहित्यकार एवं उनकी रचनागत वि"ोशताएं)

पूर्णांक

80+20=100

पाठ्य–विशय : यह प्र"नपत्र ऐच्छिक है। प्रदे"ा के बाहर से आनेवाले विद्यार्थियों की रूचि का ध्यान रखते हुए चतुर्थ प्र"नपत्र 'छत्तीसगढ़ी' के स्थान पर इस प्र"नपत्र का विकल्प रख गया है।

इसमें निम्नलिखित चार में से किसी एक का विस्तृत अध्ययन अध्यापन आव"यक होगा–

क. कबीरदास :

पाठ्य विषय–साखी, सबद रमैनी

1. कबीर का जीवन परिचय एवं साहित्यिक वि"ोषताएं
2. कबीर का रहस्यवाद एवं उलटबांसियां
3. व्याख्या– कबीर ग्रंथावली से निर्धारित साखियां और पद

अंक विभाजन

1. **ख**ंड–क : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 3–3 अंको के 4 प्र"न 3x4=12
2. खंड–ख : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 5–5 अंको के 4 प्र"न 5x4=20
3. खंड–ग : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 12–12 अंको के 4 प्र"न

   12x4=48

ख. सूरदास :

पाठ्य विषय–भ्रमरगीत, सूरसागर

1. सूरदास का जीवन परिचय एवं साहित्यिक वि"ोषताएं
2. सूरदास का भ्रमरगीत प्रसंग
3. सूरदास साहित्य में बाल वर्णन
4. व्याख्या– भ्रमरगीत और सूरसागर के निर्धारित पद

अंक विभाजन

1. **ख**ंड–क : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 3–3 अंको के 4 प्र"न 3x4=12
2. खंड–ख : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 5–5 अंको के 4 प्र"न 5x4=20
3. खंड–ग : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 12–12 अंको के 4 प्र"न 12x4=48

ग. तुलसीदास :

पाठ्य विषय–श्रीरामचरित मानस, विनय पत्रिका, कवितावली

1. तुलसी का जीवन परिचय एवं साहित्यिक वि"ोषताएं
2. तुलसी की सगुन एवं निर्गुन भक्ति
3. तुलसी का समन्वय द"र्न
4. व्याख्या–श्रीरामचरित मानस, विनयपत्रिका और कवितावली

अंक विभाजन

1. **ख**ंड–क : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 3–3 अंको के 4 प्र"न 3x4=12
2. खंड–ख : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 5–5 अंको के 4 प्र"न 5x4=20
3. खंड–ग : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 12–12 अंको के 4 प्र"न 12x4=48

घ. हिंदी उपन्यासकार (मुं"ाी प्रेमचंद):

पाठ्य विषय– गबन, गोदान, निर्मला, सेवासदन

1. प्रेमचंद का साहित्यिक परिचय
2. हिंदी उपन्यास के विकास में प्रेमचंद का योगदान
3. प्रेमचंद की उपन्यास कला
4. व्याख्या– गबन, गोदान और सेवा सदन

अंक विभाजन

1. **ख**ंड–क : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 3–3 अंको के 4 प्र"न 3x4=12
2. खंड–ख : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 5–5 अंको के 4 प्र"न 5x4=20

3. खंड–ग : संपूर्ण पाठ्यक्रम से 12–12 अंको के 4 प्र"न

12x4=48

डॉ. शंकर मुनि राय

विभागाध्यक्ष–हिंदी